International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 389-390

प्रेमचंद के साहित्य में प्रेम का आदर्श रूप

संजय कुमार

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरयाणा, भारत।

प्रस्तावना

व्यक्तिगत मन में उत्पन्न भाव–दशा प्रेम कहलाता है। यह प्रत्येक प्राणी की शारीरिक और मानसिक स्थिति में परिवर्तन के साथ–साथ परिवर्तित होता रहता है। प्रेमचंद ने पुरुष–स्त्री के विभिन्न प्रेम–संबंधो–प्रेम, मैत्री, दाम्पत्य तथा मुक्तभोग में से दाम्पत्य को ही आदर्श माना है। प्रेमचंद जी के नारी पात्र पुरूषों के सद्‌गुणों पर मोहित होकर पहले उनके प्रति भक्ति और आदर का भाव रखते हैं तथा उनका यही भाव बाद में धीरे–धीरे प्रेम में परिणत हो जाता है। 'आगा–पीछा' की श्रद्धा भगतराम की सरलता और निष्कपटता के कारण पहले उसे आदर के भाव से देखती है किंतु निरंतर साहचर्य के कारण आदर का यह भाव प्रेम में बदल जाता है। श्रद्‌धा का अपनी कल्पना का आदर्श पुरूष होता है। अपनी कल्पना के आदर्श पुरूष के सभी भाव भगतराम में पाकर श्रद्‌धा उसके प्रति समर्पित हो जाती है। 'वेश्या' कहानी की माधुरी का प्रेम भी इसी प्रकार का है। अपने प्रेमी दयाशंकर के नेत्रों में निश्छल प्रेम देखकर माधुरी उसे प्रेम करती है। प्रेमचंद जी का मानना है कि जहां एक बार प्रेम ने वास किया हो वहां उदासीनता और विराग चाहे पैदा हो जाए, हिंसा का भाव उसमें नहीं हो सकता है। उनकी नारी–पात्र आदर्श प्रेमिकाएं हैं। हिंसा का भाव उनमें नहीं है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में प्रेम के संयोग पक्ष के साथ वियोग पक्ष का भी वर्णन किया है। प्रेमचंद जी विवाह पूर्व प्रेम को अभिशाप मानते हैं। पति–पत्नी के प्रेम को ही उन्होंनें आदर्श प्रेम माना है। प्रेम–संबंधों के चित्रण में प्रेमचंद जी ने सामाजिक–सांस्कृतिक, नैतिक प्रतिबंधों का समुचित पालन किया है। वे इन बंधनों को सुदृढ़ पारिवारिक व्यवस्था के लिए आवश्यक मानते हैं। इन प्रतिबंधों के साथ–साथ प्रेमचंद जी प्रेम के मनोवैज्ञानिक अंकन करने में भी सफल दिखाई दिए हैं। प्रेमचंद जी की प्रेमिकाएं अपने प्रेम की शक्ति से अनेक प्रेमी में जीवन के उच्च आदर्शों को स्थापित करने में सफल रही है। इन प्रेमिकाओं का प्रेम अपने प्रेमियों को कर्तव्यपरायण, उच्च नैतिक आदर्श, त्याग और बलिदान के मार्ग पर अग्रसर करता है।

प्रेमचंद जी की प्रेमिकाएं अपने प्रेम के बल पर तत्कालीन परिस्थितियों के अनुभव अपने प्रेमियों को स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है। इनकी प्रेमिकाएं नारी होने के कारण नारी की सांसारिक प्रेम और देश–प्रेम' कहानी की नायिका मैण्डलीन प्रसिद्ध इतावली देशभक्त जोसेफ मैनिली से प्रेम करती है। वह उसके साथ जीवन की हर मुसीबत उठाने को तत्पर है किंतु किसी भी कीमत पर उसका साह्चर्य पाना चाहती है। वह उससे अलग नहीं रहना चाहती है। अपना जीवन राष्ट्र के नाम कर देने वाला जोसेफ मैनिली उसे अपनी प्रेमिका के रूप में स्वीकार स्वीकार न करके उसे अपनी बहन के रूप में स्वीकार करता है। वह अपने मित्रों को मैंडनीला के पास भेजता है। उन्हें यह कहा जाता है कि वे मैंडलीन के सामने उससे घटिया से घटिया छवि प्रस्तुत करे ताकि मैंडलीन उससे घृणा करने लगे। प्रेम–दिवानी मैंडलीन देश छोड़कर इटली जाती है। वह जोजेफ को एक सभा में दूर से ही देखती है। जोजेफ जब रोम जनराज्य की स्थापना में असफल रहता है तो वह मैंडलीन से पुनः प्रणय–निवेदन करता है। वह क्षमायाचना करता है। पति–पत्नी के रूप में जीवन शुरू करने से पूर्व ही वह विदेश चला जाता है और लंदन जाते समय सकी मृत्यु हो जाती है। मैंडलिन सुहागिन के रूप में उसकी कब्र पर पुष्प अर्पित करती है। वह अपने घर को आश्रम बना देती है। आश्रम का नाम जोजेफ के नाम पर रखती है। जिसमें नारियों को पनाह देती है। उसकी इच्छानुसार मृत्युपरांत उसे उसी आश्रम में दफनाया जाता है। प्रेमचंद की अधिकांश प्रेमिकाएं मैंडलीन की तरह आदर्श प्रेमिकाएं हैं।

'कायाकल्प' में वे कहते हैं– "प्रेम हृदय के समस्त सद्‌भावों का शांत, स्थिर उद्‌गारहीन समवाय है। उसमें दया और क्षमा, श्रद्धा और वात्सल्य, सहानुभूति और सामान, अनुराग और विराग, अनुग्रह और उपकार सभी मिले होते हैं।" इनमें से कोई एक भाव प्रेम को अंकुरित कर सकता है। उसका विकास अन्य भावों के मिलने से ही होता है।"[1] 'दो सखियां' कहानी की चंदा कहती है– "प्रेम का एक ही मूल मंत्र है और वह है सेवा। प्रेम का अंकुर रुप में है पर उसको पल्लवित और पुष्पित करना सेवा का काम है।"[2] 'दो सखियां' कहानी की ही पद्‌भा के अनुसार– "वह प्रेम प्रेम नहीं है जो प्रत्याधात की शरण ले। प्रेम का आदि सहृदयता है और अंत भी सहृदयता है।"[3]

जिस प्रेम का अंत विवाह न हो वह प्रेम प्रेमचंद जी की दृष्टि में निंदनीय, वासनात्मक और कलुषित है। "प्रेम जब आत्मसर्मपण का रुप लेता है, तभी ब्याह है, उसके पहले ऐयाशी है।"[4] 'ज्योति' कहानी की रुपिया का मोहन के प्रति प्रेम सहज रुपाकर्षण से प्रारंभ होकर निश्छल और विश्वास प्रेम में बदल जाता है। 'त्यागी का प्रेम' की नायिका आनन्दीबाई गोपीनाथ से सच्चा प्रेम करती है। वह प्रेम पर सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार है। गोपीनाथ आनंदीबाई के गर्भवती होने व सतमाऐं बच्चे को जन्म देने पर लोकापवाद से बचने के लिए उसके यहां जाना छोड़ देते है। अत्यंत शारीरिक–मानिसक यंत्रणा भोगने के बाद भी आनंदीबाई के मन में गोपीनाथ के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं आती। अंत में गोपीनाथ उसके पास जाकर उसे स्वीकार करते हैं ओर कहते है– "अब मुझे विदित हो गया है कि मेरी दार्शनिकता केवल हाथी का दांत थी। मुझमें क्रियाशक्ति नहीं है, लेकिन इसके साथ ही तुमसे अलग रहना मेरे लिए असहाय है। तमुसे दूर रहकर मैं जिंदा नहीं रह सकता। प्यारे बच्चे को देखने के लिए मैं कितनी बार लालायित हो गया हूँ, पर यह आशा कैसे करुं कि मेरी चरित्रहीनता का ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण पाने के बाद तुम्हे–मुझसे घृणा न हो गई होगी।"[2] इस प्रकार आनंदीबाई और गोपीनाथ का प्रेम सदा बना रहा। प्रेम बहुधा विवाह में परिवर्तन होने पर ही अडिग बना रहता है– "सच्चे प्रेम का कमल बहुधा कृपा के प्रभाव से खिल जाया करता है। जहां रुप, यौवन, संपति और प्रभुता तथा स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बोने में अकृतकार्य रहते है, वहां

प्रायः उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा वज्र और कठोर नहीं हो सकता जो सत्य–सेवा से द्रवीभूत न हो जाए।"[6]

'कायर' कहानी की वैश्य–कन्या प्रेमा अपने ब्राह्मण सहपाठी केशव से प्रेम करती है। किंतु रुढ़िवादिता के कारण असफल रहती है। केशव का परिचय देते हुए प्रेमचंद जी कहते है– "केशव नए विचारों का युवक था, जात–पात के बंधनों का विरोधी.... ब्राह्मण होकर भी वैश्य–कन्या से विवाह करके अपना जीवन सार्थक बनाना चाहता था। उसे अपने माता–पिता की परवाह न थी। कुल मर्यादा का विचार भी उसे स्वाँग–सा लगता था।"[7]

'आगा–पीछा' कहानी की नायिका वेश्या–पुत्री श्रद्धधा है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त योग्य बनती है। उसे पुरुषों से नफरत है किंतु भगतराम नायक युवक में अपने आदर्श पुरुष को पाकर उसके हृदय में प्रेम अंकुरित होता है। वे दोनों विवाह करना चाहते हैं किंतु भगतराम के माता–पिता उसे पुत्रवधू बनाने को तैयार नहीं होते। वे कहते हैं– "रंडी की बेटी चाहे इन्नर की परी हो, तो भी रंडी की बेटी है।"[8] वास्तव में सच्चे प्रेम का अभिप्राय ही त्याग व बलिदान है। आदर्श प्रेम की अपरिहार्य अहर्ताए निःस्वार्थ त्याग और बलिदान है। 'जिहाद' कहानी की श्यामा धर्मदास के सौंदर्य पर मोहित हो जाती है। श्यामा का विवाह कृशकाय व्यक्ति से हो जाता है। विषम परिस्थितियों में भी उसका पति धर्म–परिवर्तन नहीं करता व मारा जाता है। भारतीय गौरव की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों का परित्याग करने वाला उसका पति भी मरणोपरांत उसका प्रेम–पात्र बन जाता है। वह कहती है– "मैं उस धर्मवीर की ब्याहता हूं, जिसने हिंदू जाति का मुख उज्जवल किया है। तुम समझते हो कि वह मर गया। यह तुम्हारा भ्रम है। वह अमर है। मैं इस समय भी उसे स्वर्ग में बैठा देख रही हूं।"[9]

प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में आदर्श प्रेम को ही स्थान दिया है। प्रेम के पवित्र और उज्जवल पक्ष से उन्होंने उद्घाटक किया है। वे सहज, सरल व निश्चत प्रेम को महता देते है। प्रेम को कर्त्तवयपरायणता के लिए उन्हानें बलिदान करने का भी आह्वान किया है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. प्रेमचंद, कायाकल्प, पृ0 208
2. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–4, पृ0 260
3. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–4, पृ0 237
4. प्रेमचंद, गोदान, पृ0 147
5. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–6, पृ0 38
6. प्रेमचंद, वरदान, पृ0 85
7. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–1, पृ0 188
8. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–4, पृ0 104
9. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग– 7 पृ. 154